द्वारा

डॉ आशीष सिसोदिया

(ज) अंत्यस्थ या अर्द्ध स्वर - (Semi Vowel) - ये ध्वनियाँ वास्तव में श्रुतियाँ हैं जो स्वर एवं व्यंजन के मध्य पड़ती हैं, यों इनका झुकाव व्यंजन की ओर अधिक रहता है; उदाहरण के लिए - ’य‘ ध्वनि इसी प्रकार की है। ’य‘ के उच्चारण में जिह्वा न तो व्यंजन की भाँति स्पर्श करती है और न स्वरों की भाँति पार्थक्य ही रहता है। इसी प्रकार ’व‘ का उच्चारण करते समय ओष्ठ एक-दूसरे के निकट तो आ जाते हैं, किन्तु स्पर्श नहीं करते। अर्द्धस्वरों को संघर्षहीन सप्रवाह भी कहते हैं।

(2) स्थान के आधार पर - ध्वनियों के उच्चारण में विशेष प्रयत्न की आवश्यकता होती है और यह प्रयत्न भी अंग विशेष या प्रयत्न विशेष से किया जाता है। स्थान वह कहलाता है जहाँ अन्दर से आती हुई वायु को रोक कर या अन्य किसी भाँति भी विकार ला दिया जाए और ध्वनि उच्चारण की जाए। स्थान के आधार पर भी व्यंजनों के भेद हो सकते हैं -

(क) स्वर यंत्र मुखी (Laryngeal) - वे ध्वनियाँ जो स्वर-यंत्र-मुख से उच्चरित की जाती हैं, स्वर यंत्र मुखी कहलाती हैं। हिंदी की ’ह‘ ध्वनि इसी प्रकार की है।

(ख) उपलिजिह्वीय (Pharyngeal) - जो ध्वनियों के उच्चारण में स्वर-यंत्र और अलिजिह्वीय के मध्य में पैदा होती है; उपलिजिह्वीय या उपालिजिह्वीय ध्वनियाँ कहलाती हैं। अरबी की हे, एन ध्वनियाँ इसी प्रकार की हैं।

(ग) अलिजिह्वीय (Uvular)- वे ध्वनियाँ अलिजिह्वीय कहलाती हैं जिनका उच्चारण काॅवे या कलिजिह्वी से किया जाता है। अरबी की ’क़, ’ख़‘ ’ग़‘ आदि इसी प्रकार की ध्वनियाँ हैं।

(घ) कोमल तालव्य या कण्ठ्य ध्वनियाँ (Soft Palatal) - जब ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा का पश्च भाग व्यवहृत होता है और कोमल तालु का स्पर्श करता है तो कोमल तालव्य ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं। हिंदी की ’क्‘, ’ख‘, ’ग्‘, ’ङ्‘ इसी प्रकार की ध्वनियाँ हैं।

(ङ) मूर्द्धन्य (Cerebral) - मूर्द्धन्य ध्वनियाँ वे हैं जिनके उच्चारण में जिह्वा उलट कर मूद्र्धा का स्पर्श करती है। हिंदी की ’ट‘ वर्ग एवं ’ऋ‘, ’ष‘ ध्वनियाँ इसी के अन्तर्गत आती हैं। इन ध्वनियों को ’प्रतिवेष्ठित‘ भी कहा जाता है।

(च) तालव्य या कठोर तालव्य (Palatal) - जब उच्चारण करते समय जिह्वा का अग्र भाग कठोर तालु का स्पर्श करता है तो इस वर्ग की ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं। हिंदी के ’च‘ वर्ग का उच्चारण स्थान यही है। अब इनका स्थान भी धीरे-धीरे सरकने लगा है।

(छ) वत्स्र्य (Alveolar) - मसूड़े या दाँतों की जड़ों से लगा भाग ’वत्स्र्य‘ कहलाता है। जब जिह्वाग्र वत्स्र्य से स्पर्श करता है और ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं तो इस प्रकार से उच्चरित ध्वनियाँ ’वत्स्र्य‘ कहलाती हैं। हिंदी के ’न‘, ’र्‘, ’ल्‘, ’स्‘, ’ज्‘ इसी वर्ग के हैं। अंग्रेजी के ’ट्‘, ’ड्‘ भी वत्स्र्य ही हैं।

(ज) दन्त्य (Dental) - जब ध्वनियों के उच्चारण में दाँतों एवं जिह्वाग्र की सहायता ली जाती है तो इस वर्ग की ध्वनियों का उच्चारण होता है। हिंदी के ’त्‘, ’थ्‘, ’द्‘, ’ध्‘ दन्त्य हैं।

(झ) दन्त्योष्ठ्य (Labiodental) - इस वर्ग की ध्वनियों के उच्चारण में नीचे का ओष्ठ उपर्युक्त दंत-पंक्तियों का स्पर्श करता है। हिंदी की ’व्‘, ’फ्‘ ध्वनियाँ दन्त्योष्ठ्य ध्वनियाँ ही हैं।

(´) ओष्ठ्य (Bilabial) - इसे द्वयोष्ठ्य कहना अधिक उपयुक्त है; क्योंकि इन ध्वनियों के उच्चारण में दोनों ओष्ठ एक-दूसरे का स्पर्श करते हैं। इस वर्ग की ध्वनियाँ हिंदी का ’प‘ वर्ग अच्छा उदाहरण है।

\*\*\*\*\*\*